Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.712
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2602S02V14P002

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Feb'26
Issue–II(II), Volume–XIV

मुंशी प्रेमचंद की पत्रकारिता

डॉ. हिरा तुकाराम पोटकुले
श्री. शिवाजीराव पंडित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
शिवाजीनगर गढी, जि. बीड, महाराष्ट्र।
potkuleh@gmail.com

सारांश:

प्रेमचंद की लेखनी में जादू है जो समाज पर अच्छा असर छोडती आयी है। उनका कथा साहित्य हो या पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संपादकिय टिप्पणियाँ, लेखों में गजब की अभिव्यंजनात्मक क्षमता दिखाई देती है।बेजोड़ अभिव्यक्ति शैली होने के कारण बड़ी से बड़ी बात को भी वे बड़ी सरलता और निर्भिकता से कह जाते हैं। प्रेमचंद जी ने हर उस विषय पर अपनी कलम चलाई जिसमें राष्ट्र, समाज और व्यक्ति का हित निहित है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन, साहित्य, धर्म, दर्शन, शिक्षा, संस्कृति, समाज, किसान, मजदूर, छूत-अछूत, हिन्दू-मुसलमान, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति, स्त्री जगत के साथ राष्ट्रभाषा से जुड़े तमाम् मुद्दों पर अपनी कलम चलाकर समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में रिपोर्ताज, टिप्पणियाँ और संपादकिय लेख भी लिखे।

पत्रकार प्रेमचंद जी की लेखनी अन्याय, दमण और शोषण के खिलाफ जनता की आवाज बनकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने वाले स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होंने अपनी पत्र -पत्रिकाओं के माध्यम से समाज के अंत:करण में परिवर्तन और जागरण की मशाल जलाई है। उन्होंने अपनी पत्रकारिता को सामंती व्यवस्था, सांप्रदायिकता, उच -निच भेद, किसान- मजदूर समस्या और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध वैचारिक हाथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। स्वाधीनता आंदोलन, भारतीय पत्रकारिता और राष्ट्रीयता की कोई भी कहानी, विचार मुंशी प्रेमचंद जी के योगदान की चर्चा के बिना अधूरी ही है। क्योंकि प्रेमचंद जी ने संघर्ष, चिंतन और पत्रकारिता के उन उच्चतम मानकों को स्थापित किया है कि वे आज भी हमें प्रेरणा देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं।

बीज शब्द - पत्रकारिता, स्वाधीनता आंदोलन, जागरण, राष्ट्रीयता, परिवर्तन, संघर्ष

अध्ययन के उद्देश्य:

- प्रस्तुत आलेख में स्वाधीनता आंदोलन के दौरान मुंशी प्रेमचंद जी की पत्रकारिता का अध्ययन करना ।
- समाज में राष्ट्रीय चेतना को जगाना।
- वर्तमान समय में समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, शोषण के खिलाफ आम जनता को जाग्रत करना।

मुंशी प्रेमचंद कथा सम्राट तो है, वे पत्रकारिता के आधारस्तंभ भी है। प्रेमचंद जी को आमतौर पर ग्राम समाज के कुशल चितेरे कथाकार, उपन्यासकार के रूप में अधिक चर्चा होती है मगर इसके अतिरिक्त प्रेमचंद के व्यक्तित्व का विचारक, चिंतक और लेखन का एक उल्लेखनीय पक्ष है, उनकी पत्रकारिता। उनके लिए पत्रकारिता केवल जीविका का साधन न होकर सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय जागरण का एक सशक्त माध्यम है। प्रेमचंद भारतीय पत्रकारिता के उन आरंभिक उन्नायकों में से हैं, जिन्होंने पत्रकारिता के आदर्श, कर्तव्य निर्धारित कए है। पत्रकारिता धर्म है कि बिना किसी स्वार्थ या लाग-लपेट के सच को सबके सामने लाना और जनसामान्य को आपणा हित, अधिकार के प्रति जागरुक करना साथ ही न्याय की स्थापना के लिए संघर्ष करना। प्रेमचंद जी ने पत्रकारिता धर्म का आजीवन वहन किया। प्रेमचंद जी ने जमाना, माधुरी, चाँद, सरस्वती और हंस जैसी पत्रिकाओं में अपना हाथ आजमाया।

प्रेमचंद जी की साहित्य से लेकर संस्कृति, राजनीति, अर्थनीति समेत देश-दुनिया की तमाम हलचलों पर सजग दृष्टि रही है। इन्होने अपनी सजगता, समज और लेखन से हंस पत्रिका को सामंती सोच और आचरण से मुक्ति के साथ ही स्वाधिनता आंदोलन के इस दौर में पत्रकारिता करना और वो भी जनसरोकर की पत्रकारिता यह आर्थिक रूप से हितकर कार्य नहीं था बावजूद इसके पत्रकारीता के माध्यम से प्रेमचंद जी ने जनसामान्य में राष्ट्र गौरव का भाव, स्वाधीनता आंदोलन के प्रति जुडाव विकसित किया साथ ही शिक्षा व्यवस्था, सामंती व्यवस्था, सरकारी मुलाजिमों से लेकर स्त्रियों, विद्यार्थियों, युवाओं, किसानों, मजदूरों की पीडा, समस्याओं को स्पष्ट, सरल एवं बेबाक अंदाज में संपादकिय, टिप्पणी, चिंतन, विचारों में प्रस्तुत किया है।

"प्रेमचंद एक युग है, भूगोल है, मनोविज्ञान है, इतिहास हैं।निरंतर गतिमान रहना ही उनका धर्म था। प्रेमचंद ने कहा था-मैं बहुत शुभ मुहूर्त में 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा हूँ। रणभेरी बज रही है। ३ जून १९३२ को बनारसीदास को उन्होंने पत्र में लिखा- मेरी आकांक्षा बहुत ज्यादा नहीं है। खाने भर को मिल जाता है। मुझे दौलत और शोहरत नहीं चाहिए। पर मेरे भीतर मोटरबम है। मैं तीन, चार श्रेष्ठ पुस्तकें लिख सकूँ जो आजादी के काम आ सके। मेरा मानस का हंस अपनी चोंच में आजादी के संघर्ष की मिट्टी लेकर अपना योगदान कर रहा है।"[१]

मनुष्य के जीवन में स्वाधीनता बहुत बड़ा जीवन मूल्य हैं। स्वाधीनता देश, प्रदेश, राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस स्वाधीनता की लड़ाई में पत्रकारिता सबसे बड़ा शस्त्र है, इसके बिना लडना असंभव सा है। प्रेमचंद जी यह बात अच्छी तरह से जानते थे। इन्होंने अपने रचनात्मक लेखन-कहानी, उपन्यास, नाटक में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों, साम्प्रदायिक सद्भाव
सामाजिक बुराईयाँ, त्याग, बलिदान को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया तो पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से वे निरंतर अपनी आजादी की लड़ाई में, समाज के सुधार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्रकारिता के आदर्शों को अपने आचरण में लाना कठिन कार्य है। सरकारी दमन और कोप के बावजूद

प्रेमचंद जी ने स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों को कभी सीधे-सीधे तो कभी व्यंग्य के माध्यम से प्रकाशित करते रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तावित 'डोमिनियन स्टेटस' जैसे मुद्दों पर बड़ी ही बेबाकी से प्रेमचंद जी लिखते हैं,"...डोमिनियन मांगने से मिलेगा, ना स्वराज्य। जो शक्ति डोमिनियन छीन कर ले सकती है। इंग्लैंड के लिए दोनों समान हैं। डोमिनियन स्टेटस में गोलमेज कांफ्रेंस का उलझावा हैं, इसलिए वह भारत को उलझावे में डालकर भारत पर बहुत दिनों तक राज कर सकती है।...डोमिनियन पक्ष को गौर से देखिए तो उसमें हमारे राजे-महाराजे, हमारे जमींदार, हमारे धनी-मानी भाई ही ज्यादा नजर आते है। क्या इसका यह कारण है कि वे समझते हैं कि स्वराज्य की दशा में उन्हें बहुत कुछ दब कर रहना पड़ेगा? स्वराज्य में मजदूरों और किसानों की आवाज इतनी निर्बल न रहेगी। क्या यह लोग आवाज के भय से थरथरा रहे हैं? स्वराज्य गरीबों की आवाज है, डोमिनियन गरीबों की कमाई पर मोटे होने वालों की।"[२] प्रेमचंद जी ब्रिटिश सरकार को खडे बोल सुनाते है कि भारतीय जनता और स्वाधीनता संघर्ष को हलके में लेने की भूल न करें। देशहित से संबंधित किसी भी प्रश्न पर वे अपनी स्पष्ट राय रखते थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के सुधारों के प्रयास के खोखलेपन की सच्चाई को वे निरंतर उजागर करते थे।

भूमंडलीकरण के नाम पर कुछ चुनिंदा राजनेता, व्यक्ति, राजनीतिक दल अपने स्वार्थ को पाने के लिए साम्राज्यवाद को बढ़ावा देते है। इस मानसिकता के पुरस्कर्ताओं ने दुनिया के अधिकांश हिस्से को अपने कब्जे में लेकर सदियों तक उनका शोषण करते आ रहे हैं। प्रेमचंद जी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का तिव्र विरोध किया है। 'स्वराज मिलकर रहेगा' (मई १९३१), 'दमन की सीमा' (अप्रैल१९३२), 'कानूनों का व्यवहार' (जनवरी१९३५) जैसे शीर्षक से लिखी गई टिप्पणियाँ उनकी साम्राज्यवादी विरोधी चेतना के प्रमाण हैं। वे साम्राज्यवादी मानसिकता वालों को बेनकाब करते हुए लिखते हैं, "साम्राज्यवादी राष्ट्र कृषि-प्रधान देश तथा ऐसे प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व जमाये रखने की भरपूर चेष्टा करते हैं जहाँ कोयला, रबर, धातु, तेल आदि की उपज होती है क्योंकि यह सब उनके व्यवसाय के साधन हैं। इनके बिना उनका काम नहीं चल सकता।... वे अपने अभीष्ट को छिपाए रखने के लिए बड़ी लंबी-लंबी बातें करते हैं, खूब सहृदयता दिखाते हैं और सज्जनता प्रदर्शित करते हैं, किंतु इसकी ओट में अपने स्वार्थ-साधन और पिपासा-शमन के सिवा और कोई विचार वे नहीं रखते।"[३] साम्राज्यवादी शोषण की समस्या या प्रश्न पर प्रेमचंदजी का चिंतन समय से बहुत आगे बढ़ा हुआ दिखाई देता है।

ब्रिटश सरकार ने हमेशा स्वाधिनता आंदोलन को कमजोर करने के लिए जातिगत, धार्मिक तथा भाषायी प्रश्नों को हवा दी है। यही कारण है की इस दौर में स्वाधिनता अंदोलन के विकास के साथ-साथ सांप्रदायिकता सामंती व्यवस्था भारतीय समाज में एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आयी थी। प्रेमचंद यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि गाँव के लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने के लिए गाँव में पनप रही सांप्रदायिकता, दैत्याकार सामंती व्यवस्था को उखाड़ना कितना जरुरी है। इसके बिना गाँव के

युवाओं को राष्ट्रीय धारा में लाना कठिन कार्य था। अंग्रेजों ने तत्कालीन परिस्थिति में आम जनता, युवाओं को गुमराह करने का प्रयास किया है लेकिन प्रेमचंद अंग्रेजों के इस षड्यंत्र को समझकर युवाओं को समझाते हैं कि विदेशी वस्तुओं के प्रति उनका लगाव और उत्साह किस तरह उनमें दिशाहिनता पैदा कर रहा है और इसका सीधा असर स्वाधिनता आंदोलन पर हो रहा है। वे 'हंस' पत्रिका के संपादकिय टिप्पणी 'युवकों का कर्तव्य' में भारतीय युवाओं को सलाह देते है- "युवक नई दशाओं का प्रवर्तक हुआ करता है। संसार का इतिहास युवकों के साहस और शौर्य का इतिहास है।...स्वराज्य वास्तव में तुम्हारे लिए है और तुम्हें उस आंदोलन में प्रमुख भाग लेना चाहिए। गवर्नर और चांसलर तुम्हें तरह-तरह के स्वार्थ में उपदेश देकर तुम्हें अपने कर्तव्य से हटाने की कोशिश करेंगे, आप पर हमें विश्वास है। तुम अपना नफा-नुकसान समझते हो, और अपने जन्म अधिकार को एक प्याली भर दूध के लिए ना बेचोगे।... जिस गाढ़ी कमाई को देशी व्यवसाय और धंधे में खर्च होना चाहिए था वह युरोप चली जा रही है और हम उन आदतों के गुलाम होकर अपना भविष्य खाक में मिला रहे हैं।... दुनिया के जितने बड़े से बड़े महापुरुष हो गए हैं, और हैं, वे जीवन की सरलता का उपदेश देते आए हैं, और दे रहे हैं।"[४]

प्रेमचंद जी के समय बदलते हालातों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के प्रति भारतियों की ललक बढ़ रही थी। तत्कालीन पढे-लिखे और सामर्थ्यवान लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से विमुख होकर पाश्चात्य सभ्यता की ओर आकृष्ट हो रहे थे। प्रेमचंद ने इस बात को पहचाना और उसके विरुद्ध अभियान चलाया। एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण में भाषा के महत्व को उजागर कर देश की एक राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया। यही कारण है कि उन्होंने 'हंस' पत्रिका को हिंदी भाषा का उन्नायक बनाते हुए उसे अखिल भारतीय पत्रिका बनाने का यथासंभव प्रयास किया साथ ही भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच भी अपनापन हो इस पर भी बल दिया। स्वराज्य, राष्ट्र की एकता के लिए राष्ट्रभाषा की जरूरत को प्रकट करते हुए 'हंस' की संपादकिय टिप्पणी-'राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ' में वे लिखते हैं- "जिस दिन आप अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व तोड़ देंगे और अपनी एक कौमी भाषा बना लेंगे, उसी दिन आपने आप को स्वराज्य के दर्शन हो जाएंगे। मुझे याद नहीं आता कि कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के बल पर स्वाधीनता प्राप्त कर सका हो? राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है।... राष्ट्रभाषा से हमारा आशय है...इसे हिंदी कहिए, हिंदुस्तानी कहिए, या उर्दू कहिए, चीज एक है। नाम से हमारा कोई बहस नहीं।"[५]

अत: प्रेमचंद जी के लेखन की शुरुआत भले ही आदर्शवादी, सुधारवादी नजरिए से हुई थी लेकिन धीरे-धीरे वे बुनियादी परिवर्तन की सोच की ओर बढ़े। उन्होंने अपनी कलम से हर स्थिति के मूल तक जाकर गुलाम भारत की आम जनता, स्त्रियाँ, किसान, मजदूर, युवा की तस्वीर दिखाते हुए, तत्कालीन सांप्रदायिकता, सामंती व्यवस्था, पूँजीपति, राजनीति और भ्रष्टचार की पोल खोली। भारतीय समाज को पतनशील सामंती व्यवस्था और ब्रिटिशों की पराधीनता से मुक्त कराने के लिए अपनी कलम चलाई तथा विभिन्न अवरोधकों का निडरता और साहस से सामना किया और एक प्रामाणिक पत्रकार की निडर

पत्रकारिता का सर्वोत्तम आदर्श लोगों के सामने रखा। प्रेमचंद जी की पत्रकारिता हमें वैज्ञानिक सोच और आचरण का नजरिया और जन सामान्य की दुर्दशा और दीनता को समाप्त करने के लिए उठ खड़े होने की प्रेरणा देती है। प्रेमचंद जी की पत्रकारिता स्वदेशी का अलख जगाने वाली, सर्वहारा, दलित, शोषित, पीडित, किसान, मजदूर, स्त्रियों, युवाओं की आवाज है। इनकी पत्रकारिता जन सुधार, साहासिकता, निडरता, निष्पक्षता के साथ जनमत निर्माण का दस्तावेज है।

संदर्भ सूची.

१. स्वाधीनता संग्राम में मुंशी प्रेमचंद का योगदान, डॉ. रतन कुमारी वर्मा, साहित्य भारती, जुलाई-सितम्बर २००२, उत्तर प्रदेश

हिंदी संस्थान, लखनऊ, पृ.४३

२. हंसवाणी (डोमिनियन और स्वराज), हंस, प्रथमांक, मार्च : १९३० पृ.६३

३. वीरवर अब्दुल करीम और साम्राज्यवाद, कामेश्वर शर्मा 'कमल',हंस, सितंबर,१९३४ . पृ.३६

४.हंसवाणी (युवकों का कर्तव्य), हंस, प्रथमांक, मार्च: १९३०, पृ.६४

५. हंसवाणी (राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ), हंस, जनवरी,१९३५ पृ.५७